जितनी धूप तेरी, उतनी ही मेरी
जितना तेरा चाँद, उतना ही मेरा
बादल हो या आंसमा, राहें हो या कारवां
एक सा जुनून है, एक सी है चाहत भी
अहसास हो न अलगाव का, बार बार कहेंगे हम
हमें हक़ है बराबरी का, गर्व से जिएंगे हम

नज़र हो न करूणा की, भाव हो न दान का
गिरते को गर उठाया तो, अंदाज़ हो बस प्यार का
स्नेह को है जानता, स्पर्श को पहचानता
है यही महानता, एक साथ रहेंगे हम
दया नहीं समानता, मिल जुल के बढ़ेंगे हम

तेरे ही जैसा हूँ चाहे दिखलाऊं न मैं
वही सारे रंग मुझमें चाहे झलकाऊं न मैं
अंधेरों को दीप में, आँसुओं को सीप में
हार को बदल के जीत में, रख देंगे हम
हमें हक़ है बराबरी का, गर्व से जिएंगे हम

एक प्यार भरा अहसास चाहिए
दिल बस दिल के करीब चाहिए
जीवन एक पर्व सा मनाएंगे हम
हमें हक़ है बराबरी का, गर्व से जिएंगे हम

ज्योति कुंदर,
गोरेगाँव, मुंबई
9869059005